बच्चे यहां क्लास में बैठे हैं और जानते हैं हमारा टीचर कौन है। अभी यही याद कि हमारा टीचर कौन है स्टुडेन्ट को सारा समय रहती है। यहां भूल जाते हैं। टीचर जानते हैं बच्चे मुझे घड़ी2 भूल जाते हैं। ऐसा रूहानी बाप तो कब मिला नहीं। संगम युग पर ही मिलता है। सतयुग और कलियुग में तो जिस्मानी बाप मिलते हैं। यह याद दिलाते हैं कि बच्चों को पक्का हो जाये यह संगम युग है। जिसमें हम बच्चे ऐसे पुरुषोत्तम बनने वाले हैं। तो बाप को याद करने से तीनों ही याद आनी चाहिए। टीचर को याद करे तो भी तीनों याद, गुरु को याद करे तो भी तीनों याद आनी चाहिए। यह जरूर याद करना पड़ता है। मुख्य बात है पवित्र बनने की। पवित्र तो सतोप्रधान ही कहा जाता है। वह रहते ही हैं सतयुग में। अभी चक्र लगाकर आये हैं। संगम युग है। कल्प कल्प बाप भी आते हैं। पढ़ाते हैं। बाप के पास तुम रहते हो ना। यह भी जानते हो यह सच्चा सद्गुरु है। और बरोबर मुक्ति-जीवनमुक्तिधाम का भी रास्ता बताते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार हम पुरुषार्थ कर बाप को मिलो करते हैं। यहां शिक्षा पाकर मिलो करते हैं। जैसे यह सीखते हैं वैसे तुम बच्चे भी पुरुषार्थ करते हो। देवता बनना है तो शुध कर्म करना है। गन्दगी कोई भी न रहे। और बहुत कड़ी खास बात यह देनी है बाप को याद करने की। समझते हैं बाप को भी भूल जाते हैं, शिक्षा को भी भूल जाते हैं और याद की यात्रा को भी भूल जाते हैं। बाप को भूलने से बाकी सभी भूल जाते हैं। ज्ञान भी भूल जाता है। मैं स्टुडेन्ट हूं यह भी भूल जाते हैं। याद तो तीनों पड़नी चाहिए। बाप को याद करे तो टीचर सद्गुरु जरूर याद पड़ेंगे। शिव बाबा को याद करते तो साथ2 देवीगुण भी जरूर चाहिए। बाप की याद में है करामत। करामत जितनी बाप बच्चों को सिखलाते और कोई सिखला न सके। तमोप्रधान से हम इसी जन्म में सतोप्रधान बनते हैं। तमोप्रधान बनने में पूरा 5000 लगता है। अभी इस एक ही जन्म में सतोप्रधान बनना है। इसमें जो जितनी मेहनत करेंगे। सारी दुनिया मेहनत नहीं करती है। दूसरे धर्म वाले मेहनत नहीं करेंगे। बच्चों ने सा0 किया है। धर्म स्थापक आते हैं। ड्रामा बजाया हुआ है। फ्लाने2 ड्रेस में तमोप्रधान वह आते हैं। समझ भी कहते हैं जैसे हम सतोप्रधान बनते हैं वैसे सभी भी बनेंगे। पवित्रता का दान बाप से लेंगे। सभी बुलाते हैं हमको घर ले चलो। यहां से लिबरेट कर ले चलो। गाईड बनो। यह तो ड्रामा प्लैन अनुसार सभी को घर जाना ही है। अनेक बार घर जाते हैं। कोई पूरे 5000 वर्ष घर में नहीं रहते। कोई तो पूरे 5000 वर्ष घर में रहते हैं। अन्त में आयेंगे तो कहेंगे 4999 शान्तिधाम में रहे हैं। कल्प कहेंगे 4999 वर्ष इस सृष्टि पर रहे हैं। यह तो बच्चों को निश्चय है 83-84 जन्म लिये हैं। जो बहुत होशियार होंगे वह जरूर पहले आये होंगे। अभी तुम बच्चों को समझ मिली है भक्ति मार्ग की कितनी अनराईटियस बातें सीखते आये हैं। मुख्य अनराईटियस बात ईश्वर सर्वव्यापी है। जब कि वह फादर है अपने को ब्रदर्स कहते हैं फिर अपने को फादर कैसे कह सकते। सर्वव्यापी हो नहीं सकता। जब कि वह सभी आत्मायें हैं वह एक बाप है। उनसे वरसा मिलता है। विकारी दुनिया निर्विकारी दुनिया माया भी जाता है। बहुत बच्चों को दिल होती है हम भी औरों को आप समान बनाने की सर्विस करें। तो अपनी प्रजा बनाते। जैसे और सारे भाई सर्विस करते हैं हम भी करें। माताएं जरूरी हैं। कलश भी माताओं को रखा गया है। बाकी यह तो प्रवृत्ति मार्ग। दोनों चाहिए ना। बाबा पूछते हैं कितने बच्चे हैं। देखते हैं ठीक कहते हैं। 5 5 तो अपने हैं शिव बाबा को बनाता हूं। कई तो कहने मात्र ही कहते हैं। कई सचमुच बनाते हैं। जो वारिस बनाते हैं विजय माला में पिरोये जायेंगे। वारिस बनाते हैं तो बाप भी सभी को वारिस बनाने आये हैं। इतना जरूर जो सच्च2 वारिस बनाते हैं वह खुद भी वारिस बनते हैं। सच्ची दिल पर साहब राजी .. बाकी तो सभी ने मात्र ही कहते हैं। इस समय पारलौकिक बाप ही है। सभी को वरसा देते हैं। लौकिक तो कोई काम के हैं। इसलिये याद भी उनको करना है जिससे 21 जन्मों का वरसा मिलता है। बाकी तो वह जैसे किन के वर है। बुधि में ज्ञान है ना वह तो सभी रहने के नहीं हैं। बाप हरेक की अवस्था को देखते हैं सच्च2 वारिस बनाया है या बनाने का ख्याल करते हैं। वारिस बनाने का अर्थ समझते हैं। बहुत हैं जो समझते हुये भी बना

नहीं सकते। क्योंकि माया के वस हैं। इस समय या तो ईश्वर के वस या माया के वस। ईश्वर के वस जो होंगे वह वारिस बना लेंगे। माला आठ की भी होती है 108 की भी होती है। आठ तो जरूर कामल करते होंगे। सचमुच वारिस बना कर ही छोड़ते होंगे। भल वारिस भी बनाते हैं वरसा तो लेते ही हैं। फिर भी ऐसे ऊंच वारिस बनाने वालों के कर्म भी ऐसे ऊंच होंगे। कोई विकर्म न हो। विकार जो भी है सभी विकर्म है ना। बाप को छोड़ दूसरे किसको याद करना वह भी विकर्म है। बाप माना बाप। बाप मुख से कहते हैं मामेकं याद करो। डायरेक्शन मिली ना। तो एकदम याद करना उसमें है बहुत मेहनत। एक बाप को याद करे तो माया इतना तंग न करे। बाकी माया भी बड़ी जबरदस्त है। समझ में आता है माया बड़ा विकर्म कराती है। बहुत अच्छे2 जिनको महारथी कहा जाता है उनके लिये ही लिखा है गज को ग्राह ने पकड़ा। महारथी को पकड़ा ना। तब हाहाकर होता है। बड़े2 महारथियों को गिरा पटक देती है। दिन प्रति दिन सेन्टर्स वृधि को पाते रहेंगे। गीता पाठशाला कहो वा म्युजियम कहो बात एक ही हैं। नाम तो एक ब्रह्माकुमारियों का ही कायम रहेगा। सारी दुनिया के मनुष्य बाप को भी मानेंगे ब्रह्मा को भी मानेंगे। अपने को रूह (आत्मा) समझेंगे तो बाप को मानेंगे। फिर मनुष्य शरीर में आते हैं तो ब्रह्मा को बाप मानेंगे। ब्रह्मा को ही प्रजापिता कहा जाता हैं। आत्माओं को तो प्रजा नहीं कहेंगे। मनुष्य सृष्टि कौन रचते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का नाम आता है तो वह साकार हो गया। वह तो अनादि है। वह भी अनादि कहेंगे। दोनों का नाम हाईएस्ट है। वह रूहानी वह प्रजा पिता। दोनों बैठ तुमको पढ़ाते हैं। कितना हाईएस्ट हुआ। बच्चों को कितना नशा चढ़ना चाहिए। परन्तु इतना नशा चढ़ता नहीं हैं। खुशी कितनी होनी चाहिए। परन्तु माया खुशी में रहने नहीं देती है। ऐसे स्टुडेन्ट अगर विचार सागर मंथन करते रहे तो सर्विस भी कर सकते हैं। खुशी भी रह सकती है। परन्तु शायद अजन टाईम है। जब कर्मातीत अवस्था हो तब खुशी भी रह सके। अच्छा रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप दादा का प्यार गुडनाईट औरनमस्ते।

रात्रि क्लास :- 7-1-69 :- बच्चे समझते होंगे बाप जानते हैं यह हमारे बच्चे हैं रूहानी बाप जि रूहानी बाप भी जानते हैं यह भी हमारे बच्चे हैं। बच्चे समझते हैं यह हमारा बाबा है। अभी बाप तुमको पि हैं तो तुम कहेंगे फादर। जब यह न था तो कहते थे ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर। प्रजापिता ब्रह्मा पहले ग्रेट2 ग्रेन्ड फ था। भक्ति मार्ग में ग्रेट2 कहते थे ना। अभी है फादर। अभी तो प्रैक्टीकल में है। आगे कहते थे आदि देव/ प्रजा ब्रह्मा होकर गया है। सतयुग में तो ऐसे नहीं कहेंगे। न ग्रेट2 ग्रेन्ड फादर कहेंगे न अभी के मिस्ल फादर कहेंगे। वहां तो होंगे ही देवी देवता धर्म वाले। सभी मनुष्य मात्र अल्ला को याद जरूर करते हैं। उनकी महि गाते हैं। भल सर्वव्यापी कहते हैं फिर भी फादर जरूर कहते हैं। परन्तु पत्थर बुधि होने कारण समझते क्योंकि बुधि में सर्वव्यापी कामूत बैठा हुआ है। जो तुम्हारे धर्म वाले होंगे फिर समझते जावेंगे। जैसे अरविन्दो वाले समझते हैं बाप यहां ही कहां हैं। लड़ाई की तैयारियां भी सामने देखरहे हैं। रौनक देखने में आती है। वि सामने है तो जरूर बाप भी सामने हैं। विनाश के पहले स्थापना जरूर चाहिए। तुम्हारी आवाज जरूर निकलेगा। आदि द्वारा आवाज होगा। लिखेंगे बरोबर परमात्मा ब्रह्मा के तन में है। ब्रह्माकुमार-कुमारियों द्वारा स्थाप रही है। यह भी लिखेंगे परन्तु देरी है। समझ में आवेगा बाप यहां है। जान जावेंगे। देखने में कोई चीज नहीं बाकी जानेंगे जरूर। तुम लिखते भी हो लौकिक बाप, पारलौकिक बाप और अलौकिक बाप। चित्र भी डालेंगे द्वारा स्थापना भी लिखा हुआ है। स्थापना होगी तो जरूर विनाश भी होगा। अन्त में आकर इन बातों को एकदम रोवलेशन हो जावेगा। भीड़ मच जावेगी। अभी तो सभी के पास कितनी भीड़ मचती है। पुलिस रख है। पुलिस तो पिछाड़ी तक रहती है। जीत तो भारतवासियों की है। तो यह पुलिस आदि रहते हैं। उन्हों प्रत्यक्ष। तुम्हारा है गुप्त। तुम्हारा सभी काम गुप्त है। वह अपने ही काम में रहेंगे। बाकी पिछाड़ी में यह स बाप स्थापना कर रहे हैं। विनाश होना है। हिस्ट्री जरूर रिपीट होगी। सभी एक दो को बताते रहो। देखो आदि आते हैं कितने फालोअर्स बनाकर जाते हैं। यहां तो बाप पि फालोअर की बात ही नहीं। यहां तो बाप

Except as stated herein, no shares have been issued for subscription in cash within the two years preceding the date of this Offer for Sale.
CHAMPAKLAL BHAILAL CHOKSHI
GORDHANDAS N. GUPTA
Manek Chowk, Near Share Bazar, Ahme
Anandji Kalyanji Building, Opp. Dhansut
Calcutta

5-1-69

3

मामेकं याद करो। मन्मनाभव। यह मंत्र बहुतों को मिलेगा। तुम्हारी सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों डिनायस्टी बनती
। जितना तुम जानते हो और पवित्र बनते हो उतना और न जान सकेंगे न पवित्र बन सकेंगे। बाकी सुनेंगे बाप
आया हुआ है तो बाप को याद क्यों नहीं करेंगे। सो भी तुम आगे चल यह सभी देखेंगे। तुम न होंगे तो दूसरे
बहुत होंगे। उस समय तो लाखों करोड़ों समझते जावेंगे। वायुमंडल ही ऐसी होगी। पिछाड़ी की लड़ाई में सभी
डीपलेस हो जावेंगे। सभी को टच होगा। तुम्हारा आवाज भी होगा। स्वर्ग की स्थापना हो रही है बाकी सभी का
मौत तैयार है। परन्तु वह समय ऐसा होता है जो कोई के ठहरने का नहीं रहता। घूटका खाने का समय न
होगा। आगे चल बहुत समझेंगे। जो होंगे। ऐसे भी नहीं यह सभी उस समय होंगे। बहुत सजाएं भी होंगी। कोई
भी जावेंगे। होंगे वही जो कल्प2 होते हैं। उस समय सभी भूल एक बाप की याद में होंगे। आवाज भी कम हो
जावेगा। फिर अपन को आत्मा समझ बाप को याद करने में लगेंगे। तुम सभी साक्षी होकर देखेंगे। बहुत दर्दनाक
घटनाएं होती रहेंगी। बीच में सभी को मालूम पड़ेगा विनाश होना है। दुनिया चेंज होनी है। फिर शान्त हो
जावेंगे। विवेक कहता है विनाश तब होगा तब बम्स गिरेंगे। अभी आपस में कहते रहते हैं कन्डीशन करो। वचन
दो हम बम्स नहीं छोड़ेंगे। यह सभी चीजें बनी हुई विनाश के लिये। तो तुम बच्चों को खुशी भी बहुत रहनी चाहि
तुम जानते हो नई दुनिया बन रही है। समझते हो बाप ही नई दुनिया स्थापन करेंगे। वहां दुःख का नाम नहीं
होगा। उसका नाम ही है पैराडाईज। जैसे तुमको निश्चय है वैसे आगे चल बहुतों को होगा। क्या होता है जिनको
अनुभव पाना है वह आगे पावेंगे। पिछाड़ी समय याद की यात्रा भी जरूर रहनी चाहिए। अभी तो बहुत समय
पड़ा है। विनाश अभी नहीं चाहते हैं। पुरु० पूरा न करेंगे तो पद कम हो जावेगा। पुरु० करने से पद भी अच्छा
मिलेगा। उस समय तुम्हारी अवस्था भी बहुत अच्छी होगी। सा० भी करेंगे। कल्प2 जैसे विनाश हुआ है वैसे होगा।
जिनमें निश्चय होगा चक्र का ज्ञान होगा वह खुशी में रहेंगे। तब तो गायन है अति इन्द्रिय सुख.. यह पिछाड़ी
की बात है। नेचरल कैलेमिटिज भी होगा। फीलिंग आवेगा। तुम कहेंगे अभी तो स्वर्ग की ओर चलते हैं वहां कोई
दुःख नहीं होगा। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप की का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रात्रिक्लास --8-1-69 :- गायन है शेर-बकरी इकट्ठे जल पीते हैं। यह एक दृष्टान्त है। बाकी वहां ऐसे कोई होते
नहीं। यह दृष्टान्त बनाया हुआ है ऐसे प्रेम से रहना चाहिए। बिल्कुल शान्त। तो इसका नाम रख देंगे टावर आफ
सायलेन्स। जा रहे हैं टावर आफ सायलेन्स में। फिर आवेंगे टावर आफ सुख में। शान्तिधाम, सुखधाम दोनों टावर है।
यहां अशान्त दुःख है इसलिये इनको नर्क हेल कहा जाता है। तुम हैवन स्थापन कर रहे हो। तो जरा भी आवाज
न होना चाहिए। इस दुनिया किचड़ा बाकी यह थोड़ा समय है। तैयारियां सभी होती रहती हैं। खड़ा खोदते रहते
हैं फिर फटेंगे। कितने झगड़े मारा-मारी हैं। कोई सेफ नहीं। जेल में ऐसे जाते हैं जैसे कोई नाना का घर है। आज
डा०मि० कल जेल की सजा वा गोली मुंह में। यहां तुम किनारे बैठे हो। बोलो भारत में शांति थी जबकि एक
राज्य था। अभी कितनी अशान्ति है। फिर शान्ति का राज्य होने का है। बच्चे समझते हैं हम निमित्त बनते हैं
स्वर्ग की स्थापना करने तो हमको बहुत शान्ति में रहना है। शान्तिधाम सुखधाम की याद में रहना है। और सभी
को रास्ता बताना है। सुख की हि०जा० सुनानी है। अभी तुम बच्चों की दिल में है सुख की हि० जा० सतयुग त्रेता
उनको 2500 वर्ष। फिर द्वापर से रावण राज्य हुआ। फिर बाप सुख की दुनिया बनाते हैं। तुम बच्चों की है एक्की
बोले या हुसेन। भक्तिमार्ग में कितने चर्याई धक्के खाना आदि हैं। तुम बच्चों को तो एक ही बात है। अभी तुम
रावणराज्य में हो। अभी बाप को याद करना है तो पाप कट जावे। पापात्मा से पुण्यात्मा बनना है। फिर पापात्मा
होंगे नहीं। तुम संगमयुगी ब्राह्मणों का सारी दुनिया में नाम वाला है। सभी योगबल से अपना सुखशान्ति का राज्य
स्थापन कर रहे हैं। वहां दुःख का नाम नहीं। और सभी की है हद की बुधि। तुम्हारी कितनी बेहद की बात है।
तुम्हारी बुधियोग लगा रहता है शान्तिधाम से। समझते हो शान्तिधाम होना है दुःखधाम खलास होना है। ऐसी2
बुधि में रहे तो खुशी भी होगी। सजा के लायक अपन को न बनाना है। यह है सपूत बच्चों का काम। ज्ञान की
मीठी2 बातें ही आपस में करनी है। नही तो बहुत घाटा कल्प2 लिये पड़ेगा। अपन को अच्छी रीत सम्भालना है।
ओम।